प्रेस संस्कृति एवं राष्ट्रवाद

छापाखाना के आविष्कार का महत्व इस युग में आग,पहिया और लिपि की तरह है। इसके विकास कई चरणों में हुए।

प्रथम चरण : आरंभ से गुटेनबर्ग तक।

द्वितीय चरण : गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस का विकास।

तृतीय चरण : गुटेनबर्ग के बाद का तकनीकी विकास।

प्रथम चरण की विशेषताएँ

- 105 AD में टसूप्लाइलून (चीनी नागरिक) ने कागज बनाया।
- मुद्रण की पहली तकनीक चीन,जापान और कोरिया में विकसित हुई।
- 10वीं सदी के पूर्वाद्ध तक ब्लॉक प्रिंटिंग द्वारा मुद्रा–पत्र छापे गए।
- 1041 ई0 में चीनी व्यक्ति पि–शेंग ने मिट्टी की मुद्रा बनाई।
- शंघाई प्रिंट संस्कृति का केन्द्र बना, सिविल सेवा के आकांक्षी छात्रों को पुस्तक की छपाई से अध्ययन में मदद मिली।
- अध्येता के रूप में विद्वान, व्यापारी एवं सम्पन्न वर्ग सामने आया।

द्वितीय चरण की विशेषताएँ

- रेशम मार्ग से ब्लॉक प्रिंटिंग के नमूने ईसाई मिशनरी एवं मार्कोपोलो द्वारा रोम पहुँचा।
- रोमन लिपि में अक्षरों की संख्या चीनी लिपि से कम होने के कारण छपाई संस्कृति का तेजी से विकास।
- कागज बनाने की कला 11वीं सदी में यूरोप पहुँची तथा 1336 में प्रथम पेपर मिल की स्थापना जर्मनी में हुई।
- बिखरी हुई मुद्रण कला को जर्मनी के स्ट्रेसवर्ग शहर के गुटेनवर्ग ने एकत्रित कर पंच, मेट्रिक्स मोल्ड को योजनाबद्ध तरीके से बनाया।
- सीसा रांगा और स्याही का उपयोग शुरू।
- कम्पोज टाईप मैटर का मुद्रण शोध 1440 में शुरू।
- 42 लाइन एवं 36 लाइन (1448) के बाइबिल की छपाई गुटेनबर्ग के द्वारा।
- सुओफर ने इण्डलजेंस की छपाई की।
- बेसल्स, रोम, वेनिस, एण्टवर्प एवं पेरिस मुद्रण के प्रमुख केन्द्र पुनर्जागरण के भी केन्द्र बने।

तृतीय चरण की विशेषताएँ

- 1475 में इंग्लैंड में मुद्रण कला की शुरूआत।
- पुर्तगाल में 1544 ई0 में तथा पुर्तगालियों द्वारा ही 16वीं सदी में भारत में मुद्रण की शुरूआत।
- अब प्रेस धातु के बनने लगे (18वीं सदी से)
- एम0हो0 ने शक्तिचालित वेलनाकार प्रेस बनाया।
- 18वीं सदी के अन्त तक ऑफसेट प्रेस द्वारा 6 रंगों में छपाई ।
- 20वीं सदी में पेपर रील और फोटो विद्युतीय नियत्रण कार्य शुरू।

भारतीय समाचार पत्र

अंग्रेजों द्वारा प्रकाशित / ऐंग्लो इंडियन प्रेस	विशेषता 1. फूट डालो एवं शासन करो की नीति का प्रचार प्रसार 2. सरकारी खबरें एवं विज्ञापन छापना 3. भाषा—अंग्रेजी एवं संपादन कार्य कंपनी के अधिकारियों द्वारा **अंग्रेजी समाचार—पत्र** बंगाल गजट एवं इंडिया गजट— जे0के0 हिक्की (1780) कलकत्ता कैरियर, एशियाई मिरर ओरियंटल स्टार, बंबई गजट, हैराल्ड, मद्रास गजट इनका क्षेत्र कंपनी के अधिकारियों—व्यापारियों तक सीमित
भारतीय समाचार—पत्र एवं उनकी विशेषता	**समाचार पत्र** बंगाल गजट — गंगाधर भट्टाचार्य — (1816) संवाद कौमुदी — राजाराम मोहन राय — (1821) मिरातुल अखवार — राजाराम मोहन राय — (1822) बंगदत — (1830) जामे जमशेद — दादाभाई नौरोजी — (1831) रस्त—ए—गोफ्तार — अखबारे सौदागर — (1851) **नेताओं द्वारा निकाले जाने वाले समाचा—पत्र** हिन्दु पैट्रियट — ईश्वर चंद्र विद्यासागर सोम प्रकाश — ईश्वर चंद्र विद्यासागर — (1858) इंडियन मिरर — सुरेन्द्र नाथ टैगोर, मनमोहन घोंष सुलभ समाचार — केशव चन्द्र सेन अमृत बाजार पत्रिका — मोतीलाल घोष — (1868) बंगवासी — जोगेन्द्र नाथ बोस — (1881)

	हिन्दूस्तान रिव्यू — सच्चिदानन्द सिन्हा बम्बे क्रॉनिकल — फिरोज साह मेहता युगान्तर, बन्देमातरम — अरविन्द घोष एवं वारीन्द्र घोष यंग इंडिया, हरिजन — गाँधीजी अलहिलाल — मौलाना आजाद कामरेड हमदर्द — मोहम्मद अली ।
विशेषता	1. राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार–प्रसार 2. अंग्रेजी शासन की आलोचना 3. सामाजिक धार्मिक समन्वय स्थापित करना 4. सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार 5. भाषा– अंग्रेजी एवं भारतीय भाषा संपादन कार्य– समाज सुधारकों एवं राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा।

भारतीय प्रेस की राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका

1. साम्राज्यवादी शोषण का विरोध।
2. राष्ट्रीय चेतना का प्रचार–प्रसार।
3. सामाजिक–धार्मिक आन्दोलन को बढ़ावा।
4. लोकमत का प्रतिनिधित्व।
5. नई शिक्षा नीति के प्रति असंतोष को उजागर करना।
6. विदेश नीति के प्रति आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक दृष्टिकोण।
7. धार्मिक सद्भाव एवं समन्वय स्थापित करना।

प्रेस के विरूद्ध प्रतिबंध

- 1799 का समाचार पत्रों का पत्रेक्षण (सेंसर) अधिनियम – लार्ड वेलेजली।
- 1823 के अनुज्ञप्ति नियम – जॉन एडमस।
- भारतीय समाचार–पत्रों की स्वतंत्रता अधिनियम 1835 – विलियम बेंटिक।
- 1857 का अनुज्ञप्ति अधिनियम।
- देशी समाचार–पत्र अधिनियम (वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट) – 1878– लार्ड लिटन।
- 1908 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम।
- 1910 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम।
- 1931 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम (संकटकालीन शक्तियाँ)।
- समाचार पत्र जाँच समिति– 1947।
- 1951 का समाचार पत्र आपत्तिजनक विषय अधिनियम।

स्वतंत्र भारत में प्रेस की भूमिका

- साहित्य एवं समाज में चेतना जागृत करना।
- भाषा शास्त्र के विकास में योगदान।
- समाज में नवचेतना, मानवतावाद, तर्कवाद का विकास।
- सामाजिक बुराईयों एवं अंधविश्वासों का विरोध।
- स्वस्थ मनोविनोद का प्रयास।
- दिन प्रतिदिन की उपलब्धियों एवं सूचनाओं का प्रसारण।
- चौथे स्तंभ के रूप में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का दायित्व निभाना।

◆◆◆